पाठ्य का परिचय (Handout)

द्वेष करने वाले का जी नहीं भरता

पांडवों के वनवास के दिनों में अनेक ब्राह्मण उनके आश्रम से लौटकर हस्तिनापुर गए उन्होंने पांडवों की तकलीफ के समाचार धृतराष्ट्र को बताएं जिसे सुनकर वे बहुत दुखी हुए किंतु कर्ण शकुनि और दुर्योधन बहुत खुश हुए और उनके मन में पांडवों की ऐसी दशा देखने की इच्छा हुई। कर्ण ने दुर्योधन को सलाह दी कि द्वैतवन की कुछ बस्तियां हमारे अधीन हैं उन बस्तियों में चौपायों की गणना राजकुमार करते हैं इस बहाने आप राजा से अपने जाने की अनुमति ले लीजिए, अनुमति मिलने पर दुर्योधन भारी सेना लेकर द्वैतवन के जलाशय के निकट पहुंचा वहां पर पहले से ही गंधर्व राज चित्रसेन अपने परिवार के साथ डेरा डाले हुआ था इसलिए गंधर्व और कौरवों की सेनाएं आपस में भिड़ गईं। कर्ण बुरी तरह पराजित होकर भाग खड़ा हुआ। चित्रसेन ने दुर्योधन को बंदी बना लिया जब युधिष्ठिर ने सुना कि दुर्योधन और उसके साथी अपमानित हुए हैं तो उन्होंने भीमसेन से दुर्योधन को गंधर्वों के बंधन से छुड़ाने के लिए कहा युधिष्ठिर के आग्रह पर भीम और अर्जुन ने कौरवों की बिखड़ी हुई सेना को इकट्ठा किया और कौरवों को बंधन मुक्त कराया । कौरवअपमानित होकर हस्तिनापुर लौट गए।

एक बार महर्षि दुर्वासा अपने दस हजार शिष्यों के साथ दुर्योधन के राज महल में पधारे , दुर्योधन ने उनका बहुत सत्कार किया ऋषि बहुत प्रसन्न हुए तब दुर्योधन ने उनसे प्रार्थना की कि आपने हमें आशीर्वाद दिया है हम चाहते हैं कि आप हमारे भाई पांडवों को भी आशीर्वाद दें और उनका आथित्य स्वीकार करें ।

दुर्वासा ऋषि दुर्योधन की प्रार्थना मानकर पांडवों के पास गए हैं उन्होंने बहुत आव-भगत की ।

दुर्वासा ऋषि भोजन करने का कहकर नदी स्नान के लिए चले गए। द्रौपदी चिंतित हो गई क्योंकि सूर्य से प्राप्त अक्षय -पात्र से पांडवों और द्रौपदी ने भोजन कर लिया था इसलिए उसकी आज भोजन देने की सामर्थ्य जाती रही थी किंतु इसी बीच श्री कृष्ण आए और उन्होंने द्रौपदी से अक्षय पात्र मांगा ।

अक्षय पात्र में अन्न का एक दाना लगा हुआ था जिसे श्रीकृष्ण ने खा लिया और चमत्कार यह हुआ कि दुर्वासा ऋषि और उनके शिष्यों का पेट भर गया और वे वापस युधिष्ठिर के यहां नहीं आए।